अंधकार के रंगे

पुलिस का बैंड। फिर मिलिटरी का विलायती बैंड। राग और सुर की किताब पर आँख जमाये हुए मिलिटरी के जवान। किसी खानदानी रईस के हवाली-मवाली काँधों पर भरमार या दुनाली बन्दूक रक्खे, कुछ की कमर में तलवार लटकती, कुछ के हाथ में बल्लम। हलका-सा गुलाबी रंग लिये चमकदार सफेद घोड़ों की जोड़ी, नयी रोग़न की हुई चमाचम फ़िटन जिसमें देखकर कोई चाहे तो अपने बाल ठीक कर ले। फूलों से नयी दुल्हन के समान सजी हुई। शायद इसी में दूल्हा हो। मगर नहीं इसमें दूल्हा न होगा, दूल्हे का कोई भाईबन्द होगा, दूल्हा तो वह देखो हाथी पर बैठा है, सोने का छत्र लगाये। उसके सर पर देखते नहीं कितना ऊँचा-सा मौर है। उसके सँग उसका छोटा भाई भी तो शहबाला बना बैठा है, कैसा गावदी सा है (पता नहीं ये शहबाले सदा इतने गावदी क्यों दिखते हैं! मैं भी एक बार अपने एक भाई की शादी में शहबाला बना था...) एक से एक शानदार मोटरें, शेवरलेट और मर्क्युरी और हडसन और बिउक और डिसोटो, चाकलेट के रंग की और उन्नाबी रंग की और नीले रंग की और ग्रे रंग की। धुली-पुँछी, चमकती हुई—

तड़तड़ तड़तड़ और कड़क कड़ककर झय्यम झय्यम की कानों को फाड़ देनेवाली असह्य बोदी आवाज.....

शादी के दर्जनों खिलौने जिनमें अब गाँधीजी के पुतले को भी जगह मिल गयी, उन अजीबोग़रीब इन्सानी शकलों, कानिस्टिबिलों, 'बालिस्टर साहिब' और चुड़ैल जैसी नारी-मूर्तियों के बीच.....

गैस के हण्डे जिनमें आधे अच्छी तरह बलते हैं और आधे न जाने किसके नाम को रोते हैं.....

सरों पर रँगे-चुँगे मटके लिये हुए औरतें (जिनमें किसी पर दो-चार हाथी बने हैं, किसी पर हाथी और घोड़े दोनों, किसी पर दो बड़ी-बड़ी मछलियाँ—हे मीनकेतु !—, किसी पर गनेशजी और किसी पर कोई हट्टा-कट्टा, नंगधड़ंग, मुछाड़िया पहलवान, मूँछ पर हाथ रक्खे एक रमणी को गोद में लिये बैठा है—ज़रा-सा रद-बदल कर देने से यही शङ्कर-पार्वती का जोड़ा हो जायगा !) ये मटके शादी की बिलकुल जरूरी चीज़ें हैं यानी एक बार दूल्हे के बिना शादी भले हो जाय इन मटकों के बिना नहीं हो सकती, इनके पीछे समधियों में गहरी झड़पें हो जाया करती हैं।

सफेद कोट-पतलून पहने और जहाज़ियों की-सी काली टोपी लगाये बैंडवाले। रेशमी कुर्ता और धोती पहने हुए, किश्तीनुमा टोपी लगाये हुए; बूटीदार पाजामा और रेशमी या सफेद अचकन पहने, साफ़ा बाँधे ; ढीला-ढाला रेशमी पतलून और वही ढीलाढाला रेशमी कोट और रात को भी सोला हैट लगाये हुए या फेल्ट हैट से कान तक ढँके हुए या उसे गौरैया की तरह चुन्दी पर बिठाले हुए ; अपनी-अपनी औक़ात के हिसाब से अच्छा खस या सस्ता सेंट रातरानी या ओटो दिलबहार लगाये और अपने कपड़ों को उसी से बसाये बराती ;

और धुँधली-सी फ़ोर्ड वी-एट में बैठा हुआ दूल्हा।

बीस-पच्चीस औरतों का एक झुंड सड़क पर गाता-बजाता चला जा रहा है। एक टेसू के रंग की लाल धोती पहने है, एक गुलाबी रंग की धोती पहने है, एक बैंगनी रंग की धोती पहने है, एक नीले रंग की धोती पहने है, एक पीले रंग की धोती पहने है। इनमें दो एक बुड्ढी हैं, आठ-दस तीस और चालिस के बीच हैं और वही आठ-दस छोकरियाँ हैं, जिनमें पन्द्रह-सोलह की तरुणियों और दस-बारह की लड़कियों दोनों ही का शुमार है। कुछ का घूँघट बहुत लंबा है यानी नाक तक, कुछ का बहुत कम है यानी माथे के ऊपरी आधे भाग तक एक तरह से सिर्फ बालों को ढँके हुए, मगर ज्यादातर औरतों का घूँघट मध्यम मार्ग पर है यानी पूरे माथे को ढँक कर कोई पौन इंच आगे को निकला हुआ।

ये औरतें पूरे वक्त गाती रहती हैं। इनमें गानेवाली, दमदार औरतें दो तीन होती हैं, बाकी साथ देने के लिए और रास्ता काटने की गरज से बुदबुदाया करती हैं। गाना कोई हो, गानेवालियाँ कोई हों, राग और लय कोई हो, ये गाने सदा एक से सुन पड़ते हैं, वह एक खास साँचा है जिसके अन्दर ये हिम्मती, जीवटदार औरतें हर गाने को शान के साथ कसकर उसे एक तरह से अपना कैदी समझते हुए गा चलती हैं, और गाते समय जैसे पूरे वक्त गाने को टिटकारी मारती जाती हों—अब कहाँ जाओगे बच्चू, हमने तुमको कसकर बाँध लिया है.....

...और वह ठीक ही कहती हैं क्योंकि उनका मतलब अपने सुर की, मजबूत, कभी न टूटनेवाली रस्सियों से होता है!.....इन गानों का साथ देते रहते हैं दो झांझ, दो मजीरे और एक आदमी के पेट पर हाँडी की तरह लटके हुए दो तबले। इनमें बजानेवालों को अपने फ़न में बहुत कमाल हासिल होता है, क्योंकि यक़ीन मानिए उन गानों का साथ देना कोई

हँसी खेल नहीं है ! मालूम होता है कि परमात्मा ने एक ही अत्यन्त स्फूर्तिपूर्ण विदग्ध क्षण में इन गानेवालियों और इन बाजेवालों की सृष्टि की थी। आगे आगे बाजेवाले और पीछे-पीछे गानेवालियाँ, दोनों के बीच एक पन्द्रह-सोलह साल का छोकरा दूल्हा, पीली धोती और नारंगी रंग का कुर्ता पहने, पैर में कड़ा और चमरौधा जूता, तमाम शरीर में हल्दी पुती हुई, गले में एक अँगौछा। दूल्हे के अँगौछे, और आगे पीछे ऊपर नीचे चारों तरफ से अच्छी तरह ढँकी हुई पूर्ण अवगुंठनवती ग्यारह-बारह वर्षीया दुल्हन की चुनरी में गांठ लगी हुई...

चित्रा, हमने तो यह सब कुछ नहीं किया था। हमने तो केवल एक दूसरे के गले में महकते हुए बेले डाले थे—पर कहाँ, तुमको तो उस वक्त न जाने क्या हो गया था कि तुम आँखें ऊपर न उठा सकीं और माला भी तुम्हारे हाथ में पड़ी रह गयी.....तुम्हारी पलकें नमित भले रही हों मगर मैं तो जैसे तुम्हारी बड़ी-बड़ी आँखों के रास्ते ही तुम्हारे हृदय में बैठकर सब कुछ देख रहा था.....हमारी आत्माओं ने नग्न होकर एक दूसरे का आलिंगन किया था ; वहाँ झूठी कुलीनता और आभिजात्य की रक्षा करनेवाले सामान्य परिच्छद् के लिए भी जगह न थी।

आज तो मैं केवल यह सोच रहा हूँ कि तुम्हें पाकर मैं कितना सुखी हूँ, कितना चमत्कृत। मेरे मरुस्थल जैसे जीवन में तुम ठंडे पानी के एक झरने की तरह कहाँ से आ गयीं। तुम अगर न आयी होतीं तो आज मैं क्या होता कहाँ होता : तुम नहीं जानतीं, प्यास से मेरे गले में काँटे पड़ गये थे। तुमने जिस पल मेरे जीवन की देहली लाँघी मेरा अंदर-बाहर सब कुछ, रोम-रोम शिरा-शिरा जैसे नहा गयी, प्रचण्ड आतप में जैसे वट के वृक्ष की छाँह मिली। मैं पिपासाकुल था। मुझे नींद न आती थी। तुमने मेरी

प्यास बुझायी और अपनी मैत्रीपूर्ण अँगुलियों के मलयस्पर्श से मेरी आँखों में नींद ला दी और जब मैं जागा तो एक नया ही आदमी था।

चित्रा, उस नये आदमी का प्रणाम लो क्योंकि तुम ही उस नये आदमी की प्राणभार्या, उसकी माँ हो।

पर आज इस शुभवेला में तुम मेरे पास नहीं हो या मैं तुम्हारे पास नहीं हूँ तो मेरा मन न जाने कैसा हो रहा है, उदासी उसे नहीं कह सकते, वह अभाव की चेतना है, जैसे सब कुछ है मगर वह एक चीज नहीं है जिससे सब चीजें हैं, जो जीवन का बीज है.....क्या तुमको बतलाने की जरूरत है कि इस घर के कक्ष कक्ष में, कोने कोने में आलिंगनपाश में बँधी हुई हमारी स्मृतियाँ सो रही हैं? तुम भी जानती हो यह घर हमारा अभिसार-निकुंज रहा है। इस घर में हमारी नवल इच्छाएँ लताओं की तरह, हरी दूब की तरह फैली रही हैं—

लेकिन चित्रा, लताओं और हरी दूब के विमुग्ध उल्लास को मूर्छित और अभिशापित करनेवाले रूढ़ियों के खूसट, लिजलिजे गिरगिटान भी सदा वहीं दौड़ लगाते रहे हैं.....

वह कौन-सा अभिशाप था जो सदा एक प्रेत की छाया की तरह हमारा पीछा करता रहा, जिसकी तृषा थी कि वह हमारे बीच एक दुर्लंघ्य दीवार की तरह खड़ा हो जाय, जिसने कभी हमको खुलकर मिलने नहीं दिया? वह कौन-सा अभिशाप था चित्रा, जिसने चुपके-चुपके हमारे जीवन का बहुत-सा रस सोख लिया, जिसने संकेत से प्रेम को पापाचार कहा और जैसे उसके यह कहते ही प्रकाश के लोक से स्खलित होकर प्रेम का राजहंस जड़ अंधकार का चमगादड़ बन गया.....

चित्रा, उस प्रेत की छाया को हम दोनों ही पहचानते हैं। उसकी कठोरता को गलाने के लिए हमने क्या नहीं किया, कौन-सा मूल्य नहीं चुकाया, लेकिन अंधकार के वे मोटे-मोटे खंभे नहीं गले, भविष्य की ओर ताकती हुई हमारी आँखों का पथ वे रूँधते ही रहे। चित्रा, सुना तुमने अंधकार के वे मोटे-मोटे खंभे नहीं गले क्योंकि वह अंधकार कोई व्यक्ति न था यद्यपि वह व्यक्ति का रूप धरकर आया था। हजारों साल की जड़ता की तमिस्रा ही वह नेत्रहीन अंधकार थी। शायद इसीलिए चित्रा, अंधकार के वे मोटे-मोटे खंभे नहीं गले.....

उस अंधकार की शृगाल-दृष्टि हमारे हृदय के मांस पर थी। वह हमारी आत्मा का हनन माँगता था। जड़ पुराचीन नवीन आस्थाओं को अपनी आँखों के आगे कीचड़ में लिथड़ते देखना चाहता था। चित्रा, मेरा मन संतोष और आह्लाद से भरा हुआ है कि हमने वीरतापूर्वक उसकी इस धृष्टता का सामना किया और अपनी निष्ठा की पताका झुकने नहीं दी।

प्रिये, आओ इस पुनीत क्षण में आज हम फिर प्रतिज्ञा करें कि इसी प्रकार अंधकार को रौंदते हुए सतत प्रकाश की ओर बढ़ते जायेंगे। यद्यपि चित्रा, मैं समय से पहले बूढ़ा हो चला हूँ, दिन बीतते जा रहे हैं मेरी उम्र बढ़ती जा रही है जैसे मेरे पास अपनी आयु के रूप में दिनों का जो कोष है वह अक्षय नहीं है और मैं उसे तेजी से खर्च करता चला जा रहा हूँ और जल्द ही मेरे पास फिर कुछ न बचेगा और मेरा अन्त आ जायेगा और मैं बिना कुछ किये यहाँ से चला जाऊँगा.....पहले मन में ऐसी कोई बात न आती थी चित्रा, लेकिन अब न जाने क्यों अपनी जिन्दगी के इस खेल-तमाशे का अन्त मुझे दिखने-सा लगा है। वह शायद इसलिए हो कि अब जीवन में दूब की वह लहकती हुई अनन्त हरीतिमा या आम्र

मंजरी का वह अक्षय सौरभ नहीं है जिसे यौवन कहकर हमने पहचाना था.....

...लेकिन चित्रा, अभी मैं बूढ़ा नहीं हुआ हूँ, अभी अंधकार से जूझने के लिए मेरे बाहुओं में और मेरे वक्ष में असीम शक्ति है, शक्ति का अजस्र निर्झर है, निर्झर का चिर आवेगमय उच्छल प्रवाह है।